अभिव्यक्ति



قلیل جهانسوی

"क़लील" झांस्वी

(अशोक कुमार श्रीवास्तव)



"क़लील" झांसवी"   (अशोक कुमार श्रीवास्तव)   के बारे में-

जन्म- १९५१, झाँसी,उत्तर प्रदेश

पढाई- ऐल ऐल बी (बम्बई),टी वी डायरेक्शन(लन्दन)

एड्स और डॉक्युमेंट्रीज़ के प्रोडूसर,डायरेक्टर/मीडिया कलुमनिस्ट

फिल्म इंस्टिट्यूट पुणे, माइका अहमदाबाद और रामोजी हैदराबाद के प्रोफेसर।

Tel- 00 91 9892250853

E-Mail- <kumar_incomm@yahoo.co.uk>



<u>श्री इक़बाल नारायण श्रीवास्तव</u>

मेरे पिता,

मेरे गुरु,

मेरे मित्र

और शायरी के मेरे प्रेरणा स्त्रोत्र !

कितने मौसम लोगों के

कितने मौसम क़ुदरत के

नाव ने क्या क्यादेखा है

नाव ने क्या क्या झेला है!

प्यार हंसी और आहों की

नदी,भंवर ,मल्लाहों की-

कितनी यादें हैं सबकी !

कुछ बिखर जायेंगीं,

कुछ बिसर जायेंगीं,

याद रहेगी उनकी बस

साथी थे जो तूफ़ाँ में !

<u>अभिव्यक्ति</u>

'अभिव्यक्ति' मेरा दूसरा मजमूआ है। पहला 'तसव्वुरात' है। उसमें उर्दू और हिंदी की ग़ज़लें /नज़्में हैं और कुछ थोड़े से गीत भी हैं, इसमें केवल हिंदी की कवितायेँ और गीत शामिल हैं।

इस तरह पी डी एफ बना कर पोर्टल पर अपलोड इसलिए कर रहा हूँ कि आजकल न कोई मुशायरा होता है न कविसम्मेलन । आम लोग और पढ़ने लिखने वाले एक ज़माने में एक दूसरे से सुनते सीखते थे । अब जिस दौर में गूगल विद्या है और सेल फोन ज़िन्दगी उसमें किसी भी साहित्यिकविधा को पोर्टल पर डालना ही मजबूरी भी है और शायद आनेवालेसमय के लिए ठीक भी है। कल क्या पता ये भी बचे न बचे लेकिन अभी तो यही ठीक लगता है।

"क़लील" झांस्वी

<u>घर</u>

ये अटारी ये आंगन ये छज्जे तुम्हारे
बहुत मिलते जुलते हैं घर से हमारे,
वैसी ही दल्लान वैसी ही चौखट ,
बग़ल में यों ही रास्ता था हमारे !

तुम्हारे यहाँ ये जो तुलसी लगी है ,
हमारे भी आँगन में तुलसीघरा था ,
जहाँ शाम दादी जो मस्तक नवा कर,
दिया जब लगातीं तो घर जगमगाता !

ज़रा दौर अंग्रेजी का बढ़ने लगा था,
चलन आन गाओं में पढ़ना चला था,
उसी वक़्त घर में जो भाई बड़ा था,
ज़्यादा पढाई को लन्दन चला था !

बड़ा जब हुआ मैं तो सबने कहा ये,
खेती है बाड़ी है घर है मकाँ है ,
अगर शौक़ पढ़ने का फिर भी लगा है,
तो कर लो वकालत यहीं क्या बुरा है !

मगर ज़िद थी मेरी की बाहर पढ़ूंगा,

यहाँ से निकल कर के इन्सां बनूँगा ,

मैं अंग्रेजी सीखूंगा,साहब बनूँगा,

गँवारो ! मैं इक दिन जहाँ जीत लूँगा !

नहीं देखने वाला कोई बचा जब,

ज़मीनों को हमने खुद ही बेच डाला,

मकान इसलिए छोड़ आए कि शायद,

फ़राग़त के बाद आएं रहने दोबारा !

फ्लैटों मैं रह रह के दादी मरीं जब,

तो रह रह के बोलीं चलो घर चलें अब,

बहुत रह लिए साथ बेटा तुम्हारे,

जहाँ हम जिए हैं वहीं हम मरें अब !

कुहर धीरे धीरे सिमटने लगा था,

वो ख्वाबों का मंज़र चटखने लगा था,

मगर मैं भी अंदेशे उठने न देता,

मुझे तो अभी तक जहाँ जीतना था !

बहरहाल दादी मरीं जब हमारी,

सही मायनों में भटकती, बेचारी,

निगम बोध पर मैं उन्हें फूँक आया,

वो मुर्दों की गाडी थी अर्थी हमारी !

नहीं कोई पंडित मिला था जिमाने,
मिरे भाई दस दिन रहे कैसे जाने,
उसी तेरहीं हमने बरसी मनाली,
कहाँ होंगे क्या जाने अगले ज़माने !

बहुत दिन हुए पर भटकता हूँ अब भी,
जहाँ जीत लेने की है आस अब भी,
भले हौसले पस्त होने लगे हैं ,
मगर ताब जीने की है और अब भी !

कहीं दिल में लेकिन ये खटका लगा है,
कहीं तू ग़लत तो नहीं कर गया है,
वगरना ये शिद्दत,ये मेहनत का हासिल,
बड़ों से भी अपने पिछड़ सा गया है !

मैं अक्सर कहानी सुनाता हूँ घर की,
मदरसे की, मंदिर की,छोटे नगर की,
मैं बच्चों को खेती का टी वी दिखाकर,
बताता हूँ उनको वो खेती हमारी !

हमारा भी घर है,हमारा वतन है,

बड़ा प्यारा छोटा सा अपना चमन है,

वहीँ लौट कर एक दिन जायेंगे हम,

इसी में हमारा तुम्हारा अमन है !

मगर अब हमारे भी बच्चे बड़े हैं,

अब उनकी भी चौखट पे सपने खड़े हैं,

जहाँ जीत लेने के उनके भी दिन हैं,

हमारे ही बच्चे,वो ज़्यादा पढ़े हैं !

तुम्हारा ये घर देख कर याद आया,

कहाँ हमने नन्हा सा बचपन गुज़ारा,

कहाँ घुटनों चलकर क़दम पहला रक्खा,

कहाँ इश्क़ ठहरा था पहला हमारा !

अटारी ये आंगन ये छज्जे तुम्हारे,

बहुत मिलते जुलते हैं घर से हमारे,

मगर घर से रिश्ते न तुम तोड़ लेना,

न हमसे हों अल्लाह सपने तुम्हारे !

कि इक दिन अगर मैं जहाँ जीत लूँगा,

तो टूटी दीवारें कहाँ जोड़ लूँगा ?

दुबारा मैं लाऊँगा दादी कहाँ से ?

दिया रखने तुलसी पे किससे कहूंगा ?! ....कहाँ छोड़ आया न मालूम घर मैं !!

तुम्हारी क़सम तुम बहुत याद आए

अटारी से हमको बजरिया में तकना
अगर हम न देखें तो ज़ुल्फ़ें झटकना
औ फिर भौं तरेरे हुए हमको तकना
अगर देख लेवें तो झिंझरी से हटना
वो मासूम सूरत वो प्यारी सी ऑंखें
वो तस्वीर जैसे है दिल में जड़ाये !
तुम्हारी क़सम...

बज़ाजे में गर इत्तेफ़ाक़न दिखे तुम
लटें मुंह से पीछे हटाते हुए तुम
सहेली को कुछ यों दिखाते हुए तुम
हमारी तरफ हमको तकते हुए तुम
निगाहों में चाहत,वो तेवर तुम्हारे
नहीं मै ने देखे तुम्हारे सिवाए !

तुम्हारी क़सम...

जो मंदिर की सीढ़ी पे चढ़ते उतरते
पड़े सामने इत्तेफ़ाक़न अगरचे
मुझे याद है फूल मै ने गिराए
तुम्हारे लिए, औ तुम मुस्कुराये
वो खुशबू अभी तक ज़हन में बसी है
वो मंदिर की सीढ़ी न यादों से जाये !
तुम्हारी क़सम...

फिर एक मुद्दत नज़र तुम न आए
बज़ारों में गलियों में हम घूम आए,
जो लौटे तो तुम मुद्दतों बाद आए
गदराये गदराये सेंदुर सजाये
तो नज़रें मिलीं तुम जो मेले में आए
तुम्हारी नज़र भी हटी ना हटाए !

तुम्हारी क़सम..

वो बिछिये के कांटे से साड़ी अटकना
वो पाओं के झटके से पायल छनकना
वो हाथों की जुम्बिश से चूड़ी खनकना
निगाहों में फिर हमको ग़ुस्से से तकना
उसी इक लम्हे रुक गयी ज़िन्दगी
ये पल भर की बातें न भूलीं भुलाये !

तुम्हारी क़सम तुम बहुत याद आये !!

जुगाड़

आसमान पर सितारों के गुट बन गए हैं
कुछ चाँद के साथ हैं, कुछ ख़िलाफ़
जो ख़िलाफ़ हैं
वे चाँद से ज़्यादा चमकदार दिखना चाहते हैं
और इसलिए
किसी भी क़ीमत पर
चाँद को आसमान से साफ़ कर देना चाहते हैं
ताके किसी प्रकार की कोई प्रतिस्पर्धा ही न रहे
जो साथ हैं उन्होंने चाँद के चारों तरफ सुरक्षा घेरा बना रखा है
और रेफ्लेक्टरों से अपनी रौशनी चाँद पर डाल कर
उसे और चमकीला बनाने में लगे हैं.
चाँद तटस्थ है.
शांत !
वो जानता है कि अँधेरी रातों में
तारे चाहे कितना ही चमक लें
चाँद के निकलते ही सबके सब फीके पड़ जायेंगे
वे लाख चाहें
चाँद को जीत तो क्या,
उसे ललकार भी नहीं पाएंगे !
और इसलिए
फिलहाल
बग़ावती तारे इस जुगाड़ में हैं
कि कोई ऐसी युक्ति निकले
जिससे शुक्ल पक्ष ही न हो !

ज़िंदा हो तो ज़िंदा की तरह ज़िंदा रहो !

सर न झुके,

पग न डिगे,

मन न बटे,

लक्ष्य सधे,

जीत मिले,

लाख हो काँटों की डगर बढ़ते चलो ! ज़िंदा हो तो ज़िंदा की तरह ज़िंदा रहो !

कुछकोई कहे,

साथ न दे,

धूप तपे,

छत न मिले,

पाँव जले,

मंज़िले मक़सूद मगर पा के रहो ! ज़िंदा हो तो ज़िंदा की तरह ज़िंदा रहो !

हे आदि सभ्य,

हे अदि सत्य,

ज्योति पुंज,

भीरु न हो,

सम्मान जियो,

विजय असुर शक्ति पर पा के रहो ! ज़िंदा हो तो ज़िंदा की तरह ज़िंदा रहो !

ये क्या हुआ

वो साधु जो सालों से समाधिस्त था

लौट आया है

पूछता है-

ये आकाश ऐसा काला क्यों पड़ गया है?

पक्षी कहाँ चले गए ?

नदियां कहाँ लुप्त हो गयीं?

समंदर ज़मीन के इतना अंदर कैसे आ गया?

और वे बंदर,भालू,शेर,बाघ,गिलहरी इत्यादि

क्या हुए ?

ये खाल जला डालने वाली

इतनी तपिश अचानक कहां से पैदा हो गयी?

ऐसा पहले तो कभी नहीं था !

ये क्या हुआ?

दुनिया इतनी जल्दी कैसे बदल गयी?!

मेरे पास उसके लिए कोई जवाब नहीं है !

ज़िन्दगी सर्दी की धूप थी "क़लील",

फिर वो मिले औ मौसम पलट गया !

उधार के पर्सेप्शन्स

गोली का जवाब गोली से देने से तो

दुनिया ही समाप्त हो जाएगी ।

इतनी गोलियां दगीं, दुनिया तो समाप्त नहीं हुई !

एक गाल पर कोई मारे तो

दूसरा आगे कर दो ।

किसी ने मारना तो बंद नहीं किया !

देखो अमीरों को आराम गाहों में

नींद नहीं आती।

वे तो आराम से सो रहे हैं !

ग़रीब की आत्मा बद-दुआ देगी तो

सताने वाले बर्बाद हो जायेंगे।

वे तो फल फूल रहे हैं !

अच्छे कर्म करोगे,अच्छे बन कर रहोगे तो

तुम्हारा जीवन सफल होगा।

सफल तो हम देखते हैं कौन हो रहा है!

विद्यावान और नम्र लोग ही दुनिया में

पूजे जायेंगे,उन्हीं की क़द्र होगी।

यहाँ तो पैसे ने विद्या को खरीद लिया है !

उदाहरणों की कमी नहीं है !

और क्योंकि

दुनिया को

दुनिया की तरह ही

जीना होता है ,

इसलिए मेरे दोस्तो !

उधार के पर्सेप्शन्स में जीना बंद करो,

अपने अनुभवों से चलो ,

अपनी स्व-बुद्धि से काम लो,

और यथार्थ में जीना सीखो !

<u>दशहरा</u>

मन के द्वन्द मिटाते जाओ

रावण मन के मारे जाओ

राम नाम का सुमिरन करते

पवनपुत्र सों आगे बढ़ते

अहंकार को तोड़ तोड़ कर

भवसागर पर सेतु करते

दानव भीतर के जब तारो

तब रावण का पुतला बारो !

विश्व विजय की दशमी मानो !

कला आकाश में आकांशा उड़ानों की

लेकर धराशाई हो गयी कहानी हज़ारों की

इन पटाखों की तरह ही फूट कर बिखरे हैं कितने

दो घडी को चमचमाकर खो गए संसार कितने

पंख का ,पाखी का,नभ का,पवन का हाल मत आंको

बात है सब यहाँ पर विधना के विधानों की।

गीत

आसमान से ऊंचे उड़ते
चाँद को अपने गले लगाते,
तारों की कंठी गढ़वा कर
नभ का आभूषण बन जाते ।

कभी सोचता हूँ कर पाते !

औरों से खुद की तुलना कर
चकाचौंध को सूर्य समझ कर ,
स्व सामर्थ्य हीन मान कर
व्यर्थ न अपनी उम्र गंवाते।

हमभी शायद कुछ कर जाते !

जाने कितने गुरु बनाये
गुर किसने क्या क्या सिखलाये,
दो समझे सौ में भटकाए
इससे तो अज्ञानी रह जाते।

मानव योनि धर्म निभाते !

अंतिम पल में सोच रहा हूँ
खुद में खुद को खोज रहा हूँ,
तिल कपास में ढूंढ रहा हूँ
निधि अपनी कुछ सही संजोते।

काश के कुछ संचय कर पाते !

कभी सोचता हूँ कर पाते !

<u>मैं हिन्दू हूँ !</u>

शान्ति पुंज, ब्रह्माण्ड प्रदीपन,विश्वगुरु,चैतन्यस्वरूपम,

कभी रहा,

अब लुटा पिटा सा गृह निष्कासित,लज्जित,विस्मृत,तिस्कृत,

दीन हीन हूँ

मैं हिन्दू हूँ !

ज्ञान लुटा,विज्ञान लुटा,ईमान लुटा, कितना था सम्मान लुटा,

जिन हाथों ,

घायल हो ,दुर्बल तन,मूर्छित मन से पहचान गया पर तनिक

छिन्न भिन्न हूँ ,

मैं हिन्दू हूँ !

सुषुप्त नहीं,मदमत्त नहीं,प्रतिरोधी से अनिभिज्ञ नहीं,पर,

एकाकी हो,

महिषासुर से जूझ गया हूँ, देवी साथ मिले तब निश्चित जीतूं,

आशान्वित हूँ,

मैं हिन्दू हूँ !

जिसे बनाया उसने तोडा, विश्वास जगा कर रखवालों ने

जिसको लूटा,

नेता,भाई,शिष्य, गुरु या सेवक - साथी, हरदम अपनों के द्वारा

ही ठगा गया हूँ ।

मैं हिन्दू हूँ !

कलाकार

वक़्त ने मुद्दतों हुनर को तलाशा, सदियों ने तब जा के इसको तराशा,

कला ने दुआ दी औ हस्ती सँवारी, नज़र चाँद, तारों, ज़मीं ने उतारी,

हज़ारों में तब एक पैदा हुआ वो,हुनरमंद,आलिम या शायर हुआ जो ,

भटकती हुई क़ौम की रहबरी में ,हरिक काम जिसका हुआ बेहतरी में,

जो देवी का वरदान बन कर मुजस्सिम, रौशनी ज्ञान की बन के देता विहंगम,

जो तांडव की ऊर्जा है नटराज रूपम,जो वीणा की देवी का अवतार रूपम,

ओ ब्रह्मा की शृष्टि संसार रूपम,नमस्तुभ्यं,नमस्तुभ्यं कलाकार रूपम !

गीत

जाते जाते लड़ ही लेते,शायद इतने याद न आते,
याद अगर आते भी तुम तो,जी को इतना तो न रुलाते,
शायद तुमको हम भूल भी जाते !

चरणामृत के पंचद्रव्य सा ,क्या मिश्री था जीवन अपना !
दही दूध मिश्रित हो कर भी ,एक रहा जीवन भर अपना,
ये पंचामृत दूषित ही कर जाते !
शायद तुमको हम भूल भी जाते !

निश्छल मन निःस्वार्थ मिले थे,जन्मों के संयोग फले थे,
अंतर में अमृत तब फूटा,शब्द नहीं बस भाव बचे थे,
इन भावों में कुंठा ही भर जाते !
शायद तुमको हम भूल भी जाते !

धुआं धूप से उट्ठे जैसे , चार तरफ खुशबु फैलाये,
रिश्ता ऐसा बन जाये जब,कैसे उसको कोई भुलाये!
रिश्तों में बदबू सी भर जाते !
शायद तुमको हम भूल भी जाते !

गीत

सावन का बादल बन जाता, तप्त धरा की प्यास बुझाता,
उदधि संग वापस जा मिलकर, भवसागर के काज सजाता,
कुछ जीवन अपना काम तो आता !

जंगल बन आच्छादित होता, धरा पटल को रक्षित करता,
कन्द मूल औ अरण्य सम्पदा , सृष्टि हेतु सुरक्षित करता,
सन्यासी संरक्षण हो पाता !
कुछ जीवन अपना काम तो आता !

वृक्ष अगर चन्दन का होता , विष भुजंग को शीतल रखता,
मानव की औषधि भी होता, भक्तों के माथे सज जाता,
घिसा भी जा कर महक लुटाता !
कुछ जीवन अपना काम तो आता !

मरुथल में जलधारा होता,पाथेय कोई न प्यासा रहता,
आसपास खेती लहराती, त्यौहारों में मेला लगता,
हर प्राणी हर प्रकार सुख पाता !
कुछ जीवन अपना काम तो आता !

<u>गीत</u>

जब चाँद तुम्हारी खिड़की पे आ जाये समझना मैं आया हूँ,
नीचे आ कर दरवाज़े पर देख तो आना कम से कम !

मैं देखूँगा चाँद यहाँ से तुम देखोगे चाँद वहां से,
इसी बहाने अंतरिक्ष में नज़र मिलेगी यहाँ वहां से,
क्या होगा,कैसे होगा वो तो बाद की बातें हैं,
मेरी आँखें चाँद पे इस दम हैं समझ तो लेना कम से कम !

वो खुशबु जो तुममे है वो अक्सर इधर गुज़रती है,
जाने कौन यहाँ पर है जो वेणी तुम जैसी गुँथती है,
जो भी है वो जैसी है, वो याद तुम्हारी दिलवाती है,
अच्छा है कि मुश्किल है अब तुम्हें भुलाना कम से कम !

कृष्ण पक्ष और चौमासे में तुम तक कैसे पहुंचा जाये,
घोर तिमिर,भय ,सन्नाटे में कैसे क़ाबू रक्खा जाये,
तारो नभ के ! तुम ही सुझाओ उड़ते उड़ते बादल को,
गरज बरस कर व्यथा मेरी पहुंचा दे उन तक कम से कम !

जब चाँद तुम्हारी खिड़की पे आ जाये समझना मैं आया हूँ,
नीचे आ कर दरवाज़े पर देख तो आना कम से कम !

गीत

अच्छा कान्हां , ये तो बताना, कहाँ बांसुरी सीखी तुमने,
सारा बृन्दावन आता है सुनने !

शरद पूर्णिमा यमुना तट पर/ माया की सुध बुध बिसरा कर,
सब खिंचे चले आते हैं ऐसे / जैसे नीर वसुंधरा पर,
कामदेव का अहंकार तोड़ कर,
कैसा रास रचाया तुमने !

वेद ऋचाएं गोपी बन कर /धरती पर आती हैं सज कर,
पूजी जाती हैं भक्तों में ,जो राधे राधे बन कर,
एक रूप हो कर के भी,
हर का साथ निभाया तुमने !

सात चक्र के सात रंग में / बस कर के हृदय सुरंग में,
सप्त ऋषि और सूर चंद्र में,भाव, भंगिमा, अंतरंग में,
सात सुरों का जादू भर कर,
कैसा नृत्य नचाया तुमने !

मोर मुकुट से भाल सजाये / लकुट कमरिया अंग लगाये,
एक पांव से धरती थामें,दूजे से आशिष बिखराये,
जुग जुग से दर्शन की प्यासी,
सृष्टि को तर डाला तुमने !

गीत

मंगल भवन अमंगल हारी / सृष्टि तो तुमने रच डाली सारी,
मगर अकेले कितने रह गए / हाय ! अब तुम अजिर बिहारी !

सब का सब कुछ तुम करते हो/ साँस साँस पालन करते हो,
कोई नहीं पर तुमहरी सुध लेता/ नाम भी मतलब से है लेता,
कभी चैन से सांस तो लेते/ दो पल खटिया डाल अटारी !

तुमने जो ब्रह्माण्ड रचाया /कोई समझ क्या उसको पाया,
बेजोड़ कला, उत्कृष्ट सुरचना / फिर भी सबने दिया उलहना,
कुछ अपना ही परिवार रचाते / इससे तो भोले त्रिपुरारी !

कितनी बार जगत में आये / फिर भी यहाँ ठहर ना पाये,
एकाकी ही तुमको भाया / क्यों,जाने ब्रह्माण्ड निकाया,
हमको भी कुछ तो समझाते/ दीनानाथ, बिरद सम्भारी !

गृह, नक्षत्र, चित्त, अनश्वर / पांच तत्व और बुद्धि बन कर,
माया का जो जाल बुन दिया /उससे खुद को अलग कर लिया,
आओ फिर यमुना तट खेलें / अच्युत नरायन,रास बिहारी !

<u>गीत</u>

लाखों बातें करनी हैं तुमसे,

दिल में दबी हुई हैं जो जो कब से,

जब से तुम बिछड़ गए हो हमसे !

कुछ आपस की कुछ आसपास की,

मन की, तन की, अमिट प्यास की,

आपस में जो कह लेते थे, जीवन जी भर जी लेते थे ।

अब सब संभल नहीं रहा है हमसे,

लाखों बातें करनी हैं तुमसे !

चाँद छतों पर दिख जाता है,

सावन बादल भी बरसाता है,

तुम ही एक नहीं होते हो,जाने कौन देस जा रहते हो।

सपनो में आ कर मिल लेते हमसे !

लाखों बातें करनी हैं तुमसे !

तुम प्राणों में बसते हो,

साँस साँस में चलते हो,

फिर भी हो क्यों लुके छिपे से,हमसे ही अठखेल रहे से ।

अपने तो जन्मो के बंधन हैं कब से !

लाखों बातें करनी हैं तुमसे !

उर की पीड़ा क्या बतलाऊँ,

तुमको ढूंढ कहाँ से लाऊँ,

तब जान हलक़ में आ जाती है, जब चाह तुम्हारी बढ़ जाती है।

काश तुम्हें यों प्रीत न होती हमसे !

लाखों बातें करनी हैं तुमसे !

<u>होली</u>

फाल्गुन की पूनम में होलिका दहन ,

जैसे चाँदी की थाली में सोने का धन ,

जैसे अल्हड का हो जाये मतवाला मन ,

जैसे घूंघट में गोरी की छाजनकी छन ,

जैसे कान्हा की मुरली की प्यारी सी धुन ,

जैसे देवौं का धरती पे हो अवतरन !

सभी देवताओं को, अग्नि को सादर नमन !

सादर नमन !

गीत

राजा बन कर के भी रावण का वध कर सकते थे -
क्यों तुमने बनवास चुना था राम !
राजकुमार सुकुमार कहाँ तुम और कहाँ पाषाणों पर विश्राम !

देवों की स्तुति पर तुमने जन्म ले लिया दशरथ के घर ,
माता की ही मति फेर कर राज पाट का मोह त्याग कर,
बेला में अभिषेक की तुमने कैसा खेल रचाया राम !
राजकुमार सुकुमार कहाँ तुम,,,,!

जैसे रक्षण किया था तुमने गुरु वशिष्ट के अग्निहोत्र का ,
वैसे ही वध कर सकते थे खर-दूषण का असुर गणों का,
वन वन भटके,कष्ट उठाया इतना भी क्या करने राम !
राजकुमार सुकुमार कहाँ तुम,,,!

तारण शबरी और अहिल्या जैसा वैसे भी कर सकते थे,
वध तो तुम असुरों नरभक्षो का वैसे भी कर सकते थे ,
तब माया के विरह अश्रु क्यों? क्यों सेना गठवाई राम ?
राजकुमार सुकुमार कहाँ तुम ,,,,!

अवतार लिया ,उद्धार किया, संहार किया, उपकार किया ,
जन जन में मर्यादा का पुरुषोत्तम बन संचार किया ,
पर ऐसा भी क्या कष्ट उठाना,ऐसी क्या मर्यादा राम !
राजकुमार सुकुमार कहाँ तुम,,,,!

<u>गीत</u>

कैसा लगता राम अगर कहीं सीता ने त्यागा होता तुमको ?
रामायण तब कैसी होती ? जग पुरुषोत्तम कह पाता तुमको?

वन-गमन आदेश नहीं था,फिर भी साथ वो आयी,
काँटों काँटों चली संग में सेज पली तरुणाई ,
धर्म निभाया उसने अपना किस निष्ठा से रघुराई !
तेरह वर्षों वन में वरना ढाढस कौन बंधाता तुमको ?
कैसा लगता राम ,,,!

सूप-नखा अपमान हेतु ही रावण क्रोध में आया ,
तुम्हें चिढ़ाने ही को तो वो वैदेही हर लाया,
जिस वियोग ने आखिर तुमको कितना तो रुलवाया !
इतना प्यार न वो यदि करती,दुःख इतना क्या होता तुमको ?
कैसा लगता राम,,,!

राम राम कर लंका में वो बिलख बिलख कर रोइ ,
डिगा नहीं पाया उसका मन परलोभन कोई ,
सुवर्ण-द्वीप पटरानी पद क्या छोड़ सके है कोई ?
सेतु बांधते तुम भी क्या यदि उससे प्रेम न होता तुमको?
कैसा लगता राम,,,!

अशोक वाटिका से बुलवाया, अग्नि परीक्षा ले डाली,
शंका तुमने इस से अपनी सार्वजानिक कर डाली ,
उस पर भी वो प्राणवल्लभा निष्कासित कर डाली !
कभी कचोटता है क्या अंतर?चैन कभी मिल पाता तुमको ?
कैसा लगता राम,,,!

कैसा लगता राम अगर कहीं सीता ने त्यागा होता तुमको ?
रामायण तब कैसी होती ? जग पुरुषोत्तम कह पाता तुमको?

<u>गीत</u>

मन दूषित,कुत्सित, कुंठित है ,
कुछ जुगत करो मोरे राम !

ध्यान लगाना दूभर है ,
मन जैसे कोई छछूंदर है ,
ऐसे क्या संजोग हैं मेरे,
ये किन कर्मों का परिणाम !

जगती ऑंखें भटक रही हैं ,
चकाचौंध हर लपक रही हैं ,
घोर वासना के बंधन में
कितना बीधा हूँ मैं राम !

निद्रा ऐसे स्वप्न दिखाए,
जाने कहाँ कहाँ भटकाए,
तुमको भज कर के भी सोना,
शांत नहीं कर पाता राम

<u>दीवाली</u>

मन का तिमिर हटाऊँ जब मैं

तब दीवाली के दिए जलाऊँ !

स्वच्छ करूँ जब बगिया अपनी प्रेम के उसमें फूल उगाऊं

इसको,उसको ,तुमको,सबको लेकर फिर एक गीत रचाऊं

जीवन की खुशियां तब गा कर

राम विजय की जीत मनाऊं !

तब दीवाली के दिए जलाऊँ !

देश की रक्षा,धर्म की रक्षा, रक्षा सब विश्वासों की

जीव जंतु आकाश धरा और वृक्ष-पुंज जलधारों की

ब्रह्माण्ड पुत्र का क़र्ज़ उतरूं

नव जीवन की सरगम गाऊँ !

तब दीवाली की दिए जलाऊं !

मैं माटी का मानुस हो कर माटी के ही दिए जलाऊँ

घृत भाव का मन में बोरे बाटी बाटी में बटवाऊँ

अहंकार पर आग जला कर

ज्योति ज्योति से तब फैलाऊँ !

तब दीवाली के दिए जलाऊं !

मन का तिमिर हटाऊँ जब मैं

तब दीवाली के दिए जलाऊं !

गीत

लौट कर, अतीत- आजा ,प्रायश्चित करा जा ,

बोझ मन का, आत्मा का,

कम करा जा !

जानकर, नाजानकर, नादानियों, मजबूरियों में,

कृत्य हमसे हो गए जो ,होश में बेहोशियों में ,

घाव उनके रिस रहे हैं,

मलहम लगा जा !

रिश्ते सारे तोड़ डाले ,दोष मुझपर ही डाले ,

कर्म फल कह कह के मेरा, उम्र ने वर्षों निकाले ,

मुझको अपना पक्ष रखने ,

दो पल दिला जा !

एक अवसर दे मुझे, चाहे फिर जीने न दे ,

हर ग़लत को ठीक करके, मैं दिखा दूंगा तुझे,

समय के चक्र मेरे,

घूम कर आजा !

गीत

ज़िन्दगी बीच धारे,

हम किनारे किनारे !

सितारों को धरती पे लाने की बातें,

ज़माने को मुट्ठी में करने की बातें,

हरिक दौड़ में फर्स्ट आने की बातें

वो बातों से बातें बनाने की बातें

सितारे ज़मीं पर बिछाने की बातें,

ज़माने हुए आसमाँ को उतारे !

ज़िन्दगी बीच धारे,,,!

कभी हमने सोचा था कुछ तो करेंगे,

कभी, हमने सोचा था साये काटेंगे,

सही, हमने सोचा था रस्ते मिलेंगे,

हम भी सही मंज़िलों तक चलेंगे

मगर हौसले साथ कब तक चलेंगे

हवा हो गए सब इरादे हमारे !

ज़िन्दगी बीच धारे,,!

ये नहीं, हमने कोशिश नहीं की

चलने की,बढ़ने की हिम्मत नहीं की

सहन हर क़दम ग़ार ए क़िस्मत नहीं की

बीच धारे में होने की नौबत नहीं की

नाख़ुदाओं से सँगत ओ सोहबत नहीं की,

मगर लाई हर मौज हमको किनारे !

ज़िन्दगी बीच धारे,,,!

हमारा हो कोई ये हमने भी चाहा

किसी के लिए हम हों हमने भी चाहा

किसी पे ज़माना लुटा दें ये हमने भी चाहा

मोहब्बत हो जीवन में हमने भी चाहा,

ये दुनिया भी जन्नत हो हमने भी चाहा,

लगी सिर्फ दोज़ख ही हत्थे हमारे !

ज़िन्दगी बीच धारे,,!

घर वापसी

इस बार शहर में आया हूँ
तो लगता है के क्यों आया हूँ !

ये वो शहर है
जिसकी गलियों में हम आवारा फिरा करते थे
जिसके बाजार की रंगत में बहारें थीं
जिसकी झीलों में महकती थी कमल की खुशबू
जिसके चौराहों पे शहर को नाज़ हुआ करता था।
ताल के पीछे मंदिर की दिवारों के परे
हमने कुछ यूँ वक़्त गुज़ारा था के जिसे इश्क़ भी कह लो
इक बाल तुम्हारा जो मिरे कोट पे जा चिपका था
मुद्दतों वो मेरे पास हिफाज़त से रहा !

उन दिनों
मेले में खिलौनों की दुकानों से
इक बार यूँ ही हमने चुराया था कुछ
तुम खिलखिला दीं थीं
तो पकडे भी गए थे हम !

ये वो ही शहर है जहाँ
स्कूल से आते जाते
तुम मेरी बांह पकड़ कर के गिरा करती थीं

और सम्भलने का तमाशा भी किया करतीं थीं !

इस तरह दादी ने इक बार हमें देख लिया था

और इक रोज़ कहा था कि-

'बेटा ध्यान पढाई में लगाओ !'

भाई ने तो तुम्हारे भी हमें देखा था

पर वो छोटा था और समझता भी नहीं था कुछ !

ऐसी यादें हैं कि अब तक मेरी आँखों में नमीं लाती हैं

फासले लाख सही हमको नज़दीक ले आती हैं

एक मुद्दत से ये सोचा था कि लौटूंगा वतन में

ताकि उन गलियों में ,बाज़ारों में, चौराहों में

फिर से जी पाऊँ तुम्हें !

तुम न सही यादों के सहारे ही सही !

यादें-

ज़िन्दगी जिनके सहारे मैं अभी तक जीता आया !

लेकिन अबके जब मैं इस शहर में आया हूँ

तो लगता है कि क्यों आया हूँ !

अब यहाँ ख़ाक उड़ा करती है

लोग इश्क़ नहीं नफरत में जिया करते हैं

प्यार नहीं खून पिया करते हैं

दीवारें शहर में बंदूकों से दगी लगती हैं

चौराहे जो कभी शान हुआ करते थे वीरान नज़र आते हैं

और तालाब बहरसू नज़र आते हैं कीचड़ कीचड़ !

शहर बियाबान पड़ा दिखता है, चन्द आवारा कुत्तों के सिवा

कुछ कभी दिख जाते हैं बंदूक लिए,जीप घुमाते हुए लोग

जिनको इंसान भी कहने में अजब लगता है।

इसके बाजार में अब कोई दुकाने भी नहीं खुलतीं

एक खतरनाक सा सन्नाटा है मुसलसल तारी !

क्या यही मेरा वतन है जिसके साये में पला था मैं ?!

इससे बेहतर तो ये था कि मैं

गुज़रे हुए ख्वाबों में ही जीता रहता

और कभी लौट के आने की तलब मत रखता !

क्या यही वो शहर है जहाँ का दम में भरा करता हूँ?

और इसी शहर की यादों से जुड़ा रहता हूँ?

आज यहाँ मैं ने खुद अपना भरम तोड़ दिया

जो खबर सुनता था वो मैं ने खुद देख लिया !

और इस बार शहर में आया हूँ

तो लगता है के क्यों आया हूँ !

दया और माया

ठन्डे कमरे की
शीशा जड़ी खिड़कियाँ से
मज़दूर के बच्चों को देखते में
उन्हें दया आती है।
उस दया को तो वे
अपने सूटेड सहयोगियों के
साथ बांटते हुए
चाय /बिस्कुट के साथ निगल लेते हैं
लेकिन जब चाय वाला
अपनी ज़रा भीगी चप्पलें ले कर
उनके चैम्बर में
कार्पेट पर निशान बना जाता है
तो उनसे बर्दाश्त नहीं होता !

दया एक बात है
माया दूसरी !

<u>मरने वाले</u>

मरने वाले !

तुम्हारी आत्मा / तुम्हारा मन/

तुम्हारी इच्छाएं - तो कब के मर चुके थे

अपने शरीर को भी तुमने अपने अंदर

कब का मार डाला था।

आज तो सिर्फ

अंत्येष्टि हुई है।

आज दुनिया के लिए

तुम दुनिया से चले गए हो।

वैसे ही

जैसे कि मैं

दुनिया के लिए तो

दुनिया मैं हूँ !

<u>सरहदें</u>

सरहदें लोगों को बाँट देती हैं

सरहदें दुश्मनों को अलग अलग भी रखती हैं

और बहुत देर तक अलग अलग रहते हुए

दुश्मनों की दुश्मनी में कमी भी आ जाती है

उत्तेजनाएं पिघल जाती हैं

भावनाएं पलट जाती हैं

तब वही सरहदें तोड़ दी जाती हैं

इसलिए

सरहदें एक लम्बे अंतराल के बाद

एक तरह से

जोड़ने का काम भी करती हैं !

कड़कती बिजलियों के बीच

कड़कती बिजलियों के बीच

आसमान टूट कर नहीं गिर जाता।

ज़मीन,आस्मान ,चाँद,तारे,सूरज-

सब अपनी अपनी जगह अडिग रहते हैं।

बरस जाता है अक्सर सिर्फ - पानी

जैसे कभी कभी आँखों से

तमाम झनझवातोँ के दौरान !

और और सब कुछ अपनी अपनी जगह-

अडिग।

इसलिए कड़कती बिजलियों को कड़कने दो

हो सकता है बरसात भी हो- ज़ोरदार-

होने दो,,,!

ज़रुरत है अपने आप को अपनी जगह

अडिग रखने की।

क्यंकि किसी भी सूरत में

कोई आस्मान टूट कर नहीं गिर जाता।

<u>याद</u>

गोद में जिसकी पला हूँ
याद उसकी आ रही है
सांस को बोझिल बना कर
कंठ को रुंधवा रही है !
तन के कण कण में बसा है,अंश ऋषियों, पूर्वजों का,
पर्वतों का पत्तियाँ का इस धरा, नभ, नद्दियों का,
सब तरह की सृष्टियों का और मन की वृष्टियों का
सब मिलाकर श्रेष्ठ हो कर रूप उभरा जननियों का !
कोख में जिसने तराशा
पाल कर जिसने बढ़ाया
सबसे पहले प्यार करके
मुस्कुराकर थपथपाया
लोरियां गा गा के जिसने
रात भर खुद को जगाया
भूलता जाता हूँ लेकिन
भूलना मुमकिन नहीं है।
याद उसकी आज फिर से
लोरियां सुनवा रही है !
गोद में जिसकी पला हूँ, याद उसकी आ रही है !

आज गुजरिया पाँवन में,,

आज गुजरिया पाँवन में तू
मेहँदी न रचा, घुँघरू न बजा रे !

काले काले मेघ हुए हैं।
सूर्य देव निस्तेज हुए हैं।
पूनम अब जब चन्द्रहीन है,
तू बरखा में जी न जला रे !

तू क्या जाने क्यों रोता हूँ।
चुपके आँसू क्यों पीता हूँ ।
तब इठलाकर राग रचा कर
दुःख मेरा मत और बढ़ा रे !

मेरे प्रिय सी छवि तेरी है।
घुँघरू भी, मेहँदी वैसी है।
प्रियतम तो मिलकर न मिलेगा
जा, उसकी मत याद दिला रे !

आज गुजरिया पाँवन में तू
मेहँदी न रचा, घुँघरू न बजा रे !

झरोखे की झिंझरी पे टहनी हिली थी,

मैं समझा कि तुम लौट आए हो शायद।

खून पसीना दोनों,

काम न आए कौनो।

बड़े छछूंदर निकले,

आंख सुहाए जौनो।

फोन वाली लड़की

ऐय फोन पर मुझसे बात करने वाली लड़की
अब मुझे तुम अच्छी लगने लगी हो ।
तुम्हारी भाषा
तुम्हारा सलीक़ा
तुम्हारी सोच
तुम्हारी समझ-
सब कुछ मुझे धीरे धीरे अच्छा लगने लगा है।
तुम्हें देखने का छूने का मन होता है।
फिर सोचता हूँ
शायद ऐसे ही ठीक है !
अक्सर
बहुत क़रीब से देखने के बाद
अपने अपने नहीं रह जाते !
बहरहाल !
फोन अब अच्छा लगता है।
एक सूनी चारदीवार ज़िन्दगी में
घंटी बजती है तो लगता है
कहीं अपना कोई है !
कोई है जो बिलामतलब भी
बात करेगा- अपनों की तरह !
दो दिन बात न हो तो पूछेगा

कि "कहाँ हो ? दो दिन हो गए यार !"

मै -

जो दुनिया के साथ घूमता क़हक़हे लगाता हूं

लोगों के आस पास होते हुए भी

इतना अकेला हो सकता हूँ

इस बात का एहसास मुझे तुम ही ने करवाया है।

और ये एहसास भी कि भीड़ जो मेरे साथ चलती है

उससे तुम मेरी ज़्यादा अपनी हो।

हालांकि न तुम मुझे जानती हो न मै तुम्हें

लेकिन शायद यही इस रिश्ते की खूबसूरती भी है और नज़ाकत भी !

तुम्हारे फोन का इंतज़ार मुझे बेतरह इसलिए भी रहता है

कि तुमसे बेमतलब, बेबाक, बेसाख्ता, बेहिसाब बातें हो सकती हैं

जो अक्सर उनसे नहीं की जा सकतीं जिनके चेहरों से हम वाक़िफ़ होते हैं।

ये मेरे लिए नया और अजीब रिश्ता है

जो मेरे और तुम्हारे सिवा कोई और कभी नहीं जान पायेगा।

मुझे नहीं मालूम कि तुमने

अपने क़द, अपनी सूरत, अपनी आदतों के बारे में

जो कुछ मुझे बताया है वह सच है या नहीं।

मै, ये सब छोटी छोटी फ़िज़ूल की बातें जानना भी नहीं चाहता,,!

यही तो हम उन के साथ भी जानने की कोशिश करते रहते हैं

जिनको शक्लोसूरत से जानते हैं, जिनके क़रीब रहते हैं।

क्या हासिल कर लेते हैं,,,?

दरारें ,,? फ़ासिले,,,? क़ता-ताल्लुक़ात,,?

नहीं मेरी फोन वाली दोस्त

हम यों ही ठीक हैं !

तुम मुझे अपना और मै तुम्हें अपना समझते हैं- यही बहुत है।

अपने- दूर दराज़ हों तो भी ज़न्दगी कट जाती है।

और फिर तुम दूर कहाँ हो,,,!

जस्ट ए फोन कॉल अवे !

<u>न जाने कैसा शोर है.</u>

न जाने कैसा शोर है

जैसे एक हुजूम चीख रहा है

रिसरिसाते हुए दर्द की चीख

गले जैसे हिचकियों से रुंध गए हों

सांस टूट टूट के आती जाती हों

दिल फफक फफक के रो रहे हों

जैसे गठे बदन वाले लोग

चेनों में बाँध कर हंटर से पीटे गए हों

और उनके ज़ख्मों से खून टपटपा रहा हो

और वे अपने मुक़द्दर से खफा

कुण्ठिक, हताश अपनी बे-बसी रो रहे हों.

चीखें ही चीखें हैं-

चारों तरफ

बाक़ी सन्नाटा है

जैसे काली रात में खामोश क़ब्रिस्तान !

ऐसे ,जैसे कि सब मर चुके हैं

और जो बचे हैं

वो मरने वाले हैं !

मेरा दम

सुबह के इंतज़ार में

घुट रहा है !

<u>गीत</u>

कितने आकर्षण, कितने बंधन,

कैसे क़ाबू में रह पाए मन ?

बोलो भगवन !

शंख बजाये, भोग चढ़ाये ,

करी आरती, वाद्य बजाये ,

संत सभा में भजन भी गाये,

फिर भी हम ये समझ न पाए,

उचटा उचटा है क्यों मन ?

बोलो भगवन !

इन्द्रिय-निग्रह कर के देखा,

विषयों से कट कर के देखा,

वानप्रस्थ भी जी कर देखा,

निर्जल भी रह कर के देखा,

जग में ही क्यों रमता है मन ?

बोलो भगवन !

संबंधों को मिथ्या समझा,

क्रिया कलाप को माया समझा,

ज्ञान पुस्तकों का कुछ समझा,

कुछ सत्संगों से भी समझा,

छूटे नहीं छुटाये प्रपंचन !

बोलो भगवन !

सुख में दुःख में सम रहने का,

जो मिल जाये वो सहने का,

राम राम करते रहने का,

यही मन्त्र है गर जीने का,

नीरस नीरस क्यों है जीवन ?

बोलो भगवन !

कितने आकर्षण, कितने बंधन,

कैसे क़ाबू में रह पाए मन ?

बोलो भगवन !

गीत

हर घायल के घाव कहाँ दिखते हैं,

सूखे सूखे ज़ख़्म कहाँ रिसते हैं !

सम्बन्धों से घिरा नहीं है कौन यहाँ पर ,

जिस कारण छला गया हर एक यहाँ पर,

छिला हुआ अंतर्मन हर एक यहाँ पर,

जो तुमसे कहते हैं 'मैं अच्छा हूँ'

क्या वे सचमुच अच्छे होते हैं !

हर घायल के घाव कहाँ दिखते हैं !

प्यार, प्रेम, स्नेह भरे सब रिश्ते नाते,

पाठ्य पुस्तकों से स्मृति बन रह जाते,

आयु संग हम क्या क्या कुठार सह जाते,

डिग जाता है विश्वास सभी का

आहत-मन कठोर हो रहते हैं !

हर घायल के घाव कहाँ दिखते हैं !

हर पल हर अवसर होशियार रहना है,

छुरी लिए है कौन,कौन यहाँ अपना है,

दुर्योधन से हर पल अर्जुन को लड़ना है,

कौन बचा है महायुद्ध से

जीवित भी मरे हुए रहते हैं !

हर घायल के घाव कहाँ दिखते हैं !

हर घायल के घाव कहाँ दिखते हैं,

सूखे सूखे ज़ख़्म कहाँ रिसते हैं !

<u>आशिआना</u>

(आशिआना हाउसिंग के लिए एंथम)

हरिक की हर ख़ुशी में साथ हैं हम ,
हर दुःख हरिक का बांटते हैं हम !
आशिआना मेंटेनेंस हैं हम !

आशिआना में रह सकें सब लोग निश्चिंतता से,
इन प्रयासों में सदा संलग्न हैं हम !
आशिआना मेंटेनेंस हैं हम !

भावनाओं से पसीना रंग गया,परिधान पर फूटा,
लाल शर्टों में तभी तो दिख रहे हैं हम !
आशिआना मेंटेनेंस हैं हम !

वातवरण हो साफ़, सुन्दर औ सुखद हो ,
इस बात पर प्रतिबद्ध हैं हम !
आशिआना मेंटेनेंस हैं हम !

अनुमति बिना कोई भीतर आ न पाए,
सिक्योरिटी में चुस्त हैं हम !
आशिआना मेंटेनेंस हैं हम !

गीत

क्षिति जल पावक गगन समीरा ,

इन से क्या क्या रच डाला रघुवीरा !

जितना खोजूं रहे न मति धीरा !

पञ्च कोष्ठ का अधम सरीरा,

जिसमें पञ्च वायु का फेरा,

चित्त वृत्ति संचालित होता ,

नव छिद्रों का आतम-डेरा !

तुम जिसमे हो भी और नहीं रघुवीरा !

जितना खोजूं रहे न मति धीरा !

मन की चंचल गति और माया ,

कोई जिसका पार न पाया,

कितने आकर्षण औ परलोभन ,

जिनसे कोई बच ना पाया !

जकड़े हम, तुम बच निकले रघुवीरा !

जितना खोजूं रहे न मति धीरा !

धर्म, साधना, काम, अर्थ से,

संभव कैसे हो पाए हमसे,

बुद्धि जो है सृष्टि तुम्हारी,

लाख प्रपंच कराये हमसे !

त्रिगुणी माया खेल करे रघुवीरा !

जितना खोजूं रहे न मति धीरा !

ओंकार से वेद पुराना,

और सनातन संपत्ति नाना,

वर्ण ज्ञान और ऋषि मुनि से,

मानव का रच ताना बाना !

इक रामनाम से रीझ गए रघुवीरा !

जितना खोजूं रहे न मति धीरा !

क्षिति जल पावक गगन समीरा ,

इन से क्या क्या रच डाला रघुवीरा !

जितना खोजूं रहे न मति धीरा !

आज़ादी

आज़ादी का मतलब है आज़ादी !

आज़ादी-

तन की , मन की, इनकी, उनकी,जन जन की !

आज़ादी का मतलब है आज़ादी !

आज़ादी-

सहमी सहमी साँसों से,

चूर हुई आशाओं से,

भीगी भीगी आँखों से,

सुनी सुनाई बातों से,

रूढ़ी पर विश्वासों से

और निराशा भावों से !

आज़ादी का, मतलब है आज़ादी !

आज़ादी -

जब हर चेहरा मुस्काता हो,

जब हर दिल जोश जगाता हो,

जब सावन राग सुनाता हो,

जब अम्बर रंग लुटाता हो,

हर मौसम बसंत सा भाता हो,

हर बच्चा उन्मादता हो -

तब,आज़ादी का मतलब है आज़ादी !

तब,आज़ादी का मतलब है आज़ादी !

आज़ादी का मतलब है-

स्वस्थ रहो,

स्वछन्द रहो,

मदमस्त रहो,

बेफिक्र रहो,

निष्ठा से कर्त्तव्य करो,

जीवन का उत्सर्ग करो,

रक्षण अपना धर्म करो,

कभी नहीं अन्याय सहो !

तब,आज़ादी का मतलब है आज़ादी !

क्योंकि, आज़ादी का, मतलब है आज़ादी !

चलो दुआ में हाथ उठायें,

इस धरती को शीश नवाएँ,

आस पास स्नेह जगाएं,

हर बस्ती को स्वर्ग बनायें,

बीत गया जो उसे भुला कर,

एक सुखद संसार बसाएं ,

गीत स्वतंत्रता के फिर गायें,

तब आज़ादी का पर्व मनाएं !

क्योंकि, आज़ादी का मतलब है आज़ादी !

आज़ादी का मतलब है आज़ादी !

आज़ादी-

तन की, मन की, इनकी ,उनकी, जन जन की !

आज़ादी का, मतलब है आज़ादी !

<u>कॉलोनी के बग़ल में "लुज़ाइक़ा' नाम के रेस्टोरेंट के शुभारम्भ पर :</u>

आशिआना के बग़ल में लुज़ाइक़ा का खुलना,
'थड़ा' के अंधेरों में उजाला बिखरना,
ठंडी हवाओं का मन्द मन्द बहना
और फ़ज़ाओं में लज़्ज़त की ख़ुश्बू बिखरना,
'माँ-किचेन' आपके मेनू का जनाब, क्या कहना !

ये लोकेशन औ डेकॉर औ डिसिप्लिन तुम्हारी,
बड़ी 'ऐडमिरेबिल' सोच है पवन जी तुम्हारी,
है मिली जिसमें पल्लवी और दीपक, मेहनत तुम्हारी,
आशिआना और निर्मय को थी कब से ज़रुरत तुम्हारी,
तरसती थीं अब तक 'टेस्ट बड्स' बेचारी !

जो घर पर मंगाएँगे ,घर से दुआ देंगे ,
'विज़िट' जो करेंगे ,वो भी दुआ देंगे,
दुआ है के बढ़ते चलो तुम सतत ,
मुबारक हो तुमको ये शामे मुहब्बत,
मुबारक हो तुमको ये शामे मुहब्बत !

रावण-वध

पुतले में बारूद छुड़ाकर, मत रावण-वध का ढोंग रचाओ,
राघव के अवतार नहीं तुम,स्वतः स्वयं को मत भरमाओ !

त्रेता के रावण में अब में, युगों युगों का अंतर आया,
सीता एक हरी थी उसने ,ये रावण हर सीता हर लाया ,
गली गली लंका रच उसने तुम्हारा मुंह चिढ़वाया ,
उसका तो कुछ कर न सके तुम ,मूक खिलौना मत फुंकवाओ !

आज विभीषण राज कर रहा,रावण का मुखबिर बन कर के,
दैत्य राज फल फूल रहा है,सुराज्य की क़समें दे कर के ,
प्रश्न उठाते भी डरते हो,सब कुछ जाना बूझा हो कर के ,
रामायण की ओट प्रदर्शन छद्म अहंकार का मत करवाओ !

पहले बन बन भटके के देखो, राज पाट का मोह त्याग कर,
काँटों पर सो कर के देखो, मर्यादा का जीवन जी कर ,
तब समझोगे राम की लीला औ भागा रावण क्यों सीता ले कर,
अवलोकन कर पाओ तब शायद, दश-हारा सही मनवाओ !

हिन्दू

कुछ गर्व करो तुम हिन्दू हो,
कुछ शर्म करो तुम ऐसे हो !

मातु पिता से अधिक आस्था गोरे पर रख छोड़ी है,
स्वयं सनातन से भी तुमने धर्म आस्था छोड़ी है,
खुद पर खुद विश्वास नहीं,
तुम बिना जड़ों के वृख जैसे हो !
शर्म करो तुम ऐसे हो !

राम से तुमने सीख नहीं ली,रावण सा इतराते हो,
सत्य अहिंसा की परिभाषाएं ग़लत सलत बतलाते हो,
पथ से भ्रमित हुए तुम बिलकुल,
भटके बालक जैसे हो !

पांच साल के ग्वाल बाल को पचपन से नचवाते हो,
फिर उसको तुम प्रौढ़ औरतों के साथ साथ नचवाते हो,
कृष्ण नाम को दूषित कर के,
रास उसे तुम कहते हो !
शर्म करो तुम ऐसे हो !

अहंकार और लालच ने ये कहाँ तुम्हें पहुँचाया है,
भूतकाल ने तुमको क्या कुछ भी नहीं सिखाया है,
तुम प्रकाश के आगे जैसे,
दीवार उठाये बैठे हो !
शर्म करो तुम ऐसे हो !

परम्पराएं उच्च कोटि की औ व्यवहार निम्न कोटि का,
दुनिया के सिरमौर कभी थे हो गया ये कैसे ऐसा ,
दूरदृष्टि विहीन हुए से ,
सोचो क्यों तुम ऐसे हो !
शर्म करो तुम ऐसे हो !

कुछ गर्व करो तुम हिन्दू हो,
कुछ शर्म करो तुम ऐसे हो !

==========

ठगे जा रहे हो हमको लेकिन रीझ रहे हैं तुम पर फिर भी ,
या कुछ जादू है तुम में या परिपक्व नहीं हम अब भी !

<u>नियम प्रकृति के ,,,</u>

कर्मों का फल देने वाले,
बदल दिए क्या नियम प्रकृति के ,
या भगवन,हम ही मारे हैं कुमति के ?

मानवता का चीर हर रहे,वो तो फूले फले जा रहे,
औ जो सज्जन धर्म निभाते,वे बेचारे मरे जा रहे,
धर्म भी अब परिभाषित होगा
क्या मानव ही की मति से?

पंचभूत को दूषित करते , मैं मैं कर इतराते फिरते,
षड्यंत्रों का जाल बिछा कर,बाहर से मुस्काते फिरते,
पाल रहे हैं इन जैसों को
अब क्या इष्ट सुरति के ?

क्षण भंगुर, पर जिए जा रहे,विश्व नियन्त्रणकिये जा रहे,
अमृत वाणी बोल बोल कर विषमय जग को किये जा रहे,
अभय-दान है इनको क्या
जग-संहार दुर्गति से ?

कर्मों का फल देने वाले,
बदल दिए क्या नियम प्रकृति के ,
या भगवन,हम ही मारे हैं कुमति के ?

गीत

ज़िन्दगी तुम से मिल कर परीशाँ हुई,
और तो और ख़ुद से गुरेज़ाँ हुई ,
कितनी मदमस्त हो कर के रक़्सां हुई !

तुम मिले जैसे मिल जाए जन्नत कोई ,
बेवजह जैसे फल जाये मन्नत कोई ,
फिर न रह जाये जैसे कि चाहत कोई ,
आज सदियों में रहमत फरोज़ाँ हुई !

जैसे चन्दन की ख़ुश्बू हवा में घुले ,
जैसे सावन में कुछ देर सूरज खिले ,
जैसे आँगन के कोने में नरगिस फुले,
इस तरह आज क़ुदरत मेहरबाँ हुई !

नींद का ख़्वाब का कैसे दूँ शुक्रिया ,
झलक ही सही,तुमको दिखला दिया ,
जीते रहने का फिर से बहाना दिया ,
उम्र की रहगुज़र फिर दरख्शां हुई !

ज़िन्दगी तुम से मिल कर परीशाँ हुई,
और तो और ख़ुद से गुरेज़ाँ हुई ,
कितनी मदमस्त हो कर के रक़्सां हुई !

<u>रिश्ते</u>

परम्पराओं की जर्जर पतवारों से
रश्तों की टूटी नैया खेते खेते
सोचा था कि कम से कम
वहाँ तक तो पहुँच ही जाऊँगा
जहाँ तक ऑपचारिक निभावन का
छिछला पानी होगा !

लेकिन बीच धारे पतवार चरमरा गयी
और नाव के नीचे का सुराख भलभला गया।

अब बीच धारे, यहाँ, बर्फ़ीले पानी में
रह गया हूँ अकेला, निहत्था
अपनी महाभारत में
एक व्यर्थ से पात्र की तरह !

काश मैं ने तैरना सीखा होता !

<u>कश्मीर</u>

१.

हरी वर्दी में

नीले लोग

पीली मानसिकता

अंजाम देने के लिए

छुटाते हैं बारूद

लुटाते हैं रंग

उड़ाते हैं धुआं

फहराते हैं झंडे--

सफ़ेद टोपी के लिए

लाल होली में

हरे पेड़ का जश्न !

२.

इक्का दुक्का फूलों की खुशबुओं में

मिली जुली सड़ांध

उसी खून की है

जो चार दीवारी से ऊब कर

डल के किनारे

चिनारों की खुली हवा में

सांस लेने आया था.

कल उन्होंने

उसे भी मार डाला !

३.

क़ुदरत के हरे रंग

खून के धब्बों से मिल कर

धुंधले पड़ गए हैं

कायनात पीली पड़ गयी है

आँखों में दहशत बढ़ गयी है

रात तो रात

अब लोग दिन में भी

बग़ैर ज़रुरत बाहर नहीं निकलते.

बाहर अब सनसनाती फिरती हैं गोलिया !

शाम को लौटती चिड़िया

शाम को चहचहाती

लौटती चिड़िया को

ये नहीं मालूम कि उसके बसेरे वाला पेड़

काट दिया गया है,

घोंसले में रखे उसके अंडे रौंद दिए गए हैं

पेड़ वाली जगह पर मॉल बनाने की प्रक्रिया जारी है.

लौटते लौटते चिड़िया को अँधेरा हो जायेगा और

जब वह घर ढूंढते ढूंढते भटकेगी

तो अंदेशा ये है कि

खुले पड़े बिजली के तारों को

डालियाँ समझ कर

उनसे टकरा कर

कहीं वह भस्म न हो जाये.

क्योंकि ऐसा अक्सर

दिहाड़ी मज़दूरों और अवैध कही जाने वाली बस्तियों

के साथ भी होते देखा गया है.

<u>भ्रान्ति-</u>

देखने देते हो आसमान

पालने देते हो उड़ान के सपने

और फिर

उठा देते हो कांच की दीवारें चारों तरफ

ताके हम बाहर साफ़ देख सकें

और समझें

कि हम उड़ने के लिए

आज़ाद हैं लेकिन

जैसे ही उड़ान की

कोशिश करें

दीवार से टकराएं

टकरा कर सर फोड़ लें ,

गिर पड़ें,

मर जाएँ !

<u>अभिशप्त</u>

अक्सर

मानस में पुरानी यादें

ऐसे बजबजाती हैं

जैसे निर्माल्य सड़ता हुआ किसी बंद सीवर में.

-बदबू मारता हुआ!

जिसे साफ़ करने भी कोई बाहर से नहीं आ सकता !

और खुद

जब मैं इनसे भागना चाहता हूँ तो

हर एक दस- दस-सिरा हो कर

खड़ी हो जाती हैं लाल आँखें किये सामने

चीत्कारती हुई

जिनमे दब कर रह जाता हूँ

चुपचाप

बदबू के साथ जीने के लिए

अभिशप्त !

ज़िन्दगी जैसे कटी,वैसे कटी कैसे, हम भी नहीं समझे,

जैसे आकाश में बिजली सी चमक जाये औ गिर जाये कहीं जा कर !

खिड़कियां आमने सामने .

जब में आत्म बल की बात करता हूँ
तो वे मुझे जिम ले जाते हैं
जब में सुंदरता की बात करता हूँ
तो वे मेक अप का सामान जुटा देते हैं
जब में आरामदेह जीने की बात करता हूँ
तो वे मेरे सामने नए नए फैशन ले आते हैं
जब में कहता हूँ कि मैं उड़ना चाहता हूँ-
खुले आकाश में,स्वछन्द
तो वे मुझसे एम्बिशन/एस्पिरशंस की बात करते हैं
जब मैं संपूर्ण मानवीयता की बात करता हूँ
तो वे मुझे इंटरनेट के दो चार नए ऐप्स थमा देते हैं
या तो वे मुझे और में उन्हें समझ नहीं पा रहे हैं
या शायद वे अपनी बाज़ारू मजबूरियों में फंसे-जकड़े हुए हैं !
या शायद जैसा कि वे कहते हैं-
मैं अपने आप को इंडिविजुअल की बजाये
सृष्टि का हिस्सा मानता हुआ हीनता का शिकार हूँ !

और शायद इसीलिए-वे मुझ पर और मैं उन पर हँसते हैं !
वे-तंज़ में
मैं- उनके मुझको न समझ पाने पर !

तो क्या हम दोनों ही

अपने अपने घरों की

जैसे एक दुसरे के सामने खुलने वाली खिड़कियों को

बंद रख कर बात कर रहे हैं ?!

मज़दूर

आज उसका उपवास है.

और नमक खाना मना है

लेकिन

माथे से टपकते हुए

पसीने की बूंदों का नमक

ढुलकते हुआ

चला आता है मुंह में.

हाथ बोझा उठाने में व्यस्त हैं

तो क्या

उसका आज का उपवास भी

खंडित हो गया !

दीवारों के कानों में रुई ठूंस दी है,

अबके आओ तो दिल की बात कह लेना.

रौशनी से भरा शहर

रौशनी से भरा इक शहर देखिये
दिल में सारे अँधेरे छुपाये हुए.

कोने में कुतरे में कचरे के ढेरे,
सड़ी तंग गलियों में बदबू के डेरे,
धसकती दिवारों के पुरखौफ़ घेरे,
थकी ज़र्द आँखों के बीमार चेहरे-
जिनको सदियाँ हुईं मुस्कुराये हुए !
रौशनी से भरा इक शहर..

जहाँ नौनिहालों में बचपन नहीं है,
जवानी जहाँ खिलखिलाती नहीं है,
जहाँ आदमी आदमी सा नहीं है,
जहाँ ज़िन्दगी ज़िन्दगी ही नहीं है.
ख़ुशी छुप गयी मुंह चुराए हुए !
रौशनी से भरा इक शहर..

इरादों से ऊंची ईमारत जहाँ पे,
सदियों से लम्बी हैं सड़कें जहाँ पे,
भटकते हुए फिर भी हैं सब यहाँ पे,
ये किसका शहर है,हैं क्यों सब यहाँ पे ,
के हौसले सबके हैं चरमराए हुए !
रौशनी से भरा इक शहर..

ये हीरे का ब्योपार शीशे से कर दें,
ये माओं को बीबी को नीलम कर दें,
मिलाते हुए हाथ कब वार कर दें,
दो टके में ये बस्ती को बर्बाद कर दें,
साहिब ए दहर बन के फिरते हैं ये जो ,
ख़ज़ाने हैं सबके चुराए हुए !
रौशनी से भरा इक शहर...

रौशनी के तले इन अंधेरों में गुम,
सहते हुए लाख ज़ुल्म ओ सितम,
सही लोग भी हैं वले हैं ये कम,
जो कोशिश में हैं के मिटा दें ये तम,
उमीदें सभी उनसे हैं लगाए हुए !
रौशनी से भरा इक शहर...

गीत

श्री कृष्ण गोविन्द हरे मुरारे,

अच्युत अनंता भगत-पियारे,

हरहु नाथ मम अवगुन सारे !

बहुत हाड़ मांस ने दुलराया,वैभव ने क्या क्या दिखलाया,

संचित संजोगों ने भी चाहत से ज़्यादा उलझाया।

काटो अब ये बंधन सारे !

हरहु नाथ मम अवगुन सारे !

भावों में कुंठा है मेरे, मति में कितने भ्रम के डेरे,

मिथ्या की वेदी पर जीवन घूम घूम करता है फेरे।

जनन जनम के चक्र छुटा रे !

हरहु नाथ मम अवगुन सारे !

पञ्च वायु का तर्पण मेरा, पञ्च कोष का अक्षत मेरा,

आह आह का क्रंदन मेरा, अर्पण सब चरणों में तेरा।

धर दृष्टि इधर भी धरती-धारे !

हरहु नाथ मम अवगुन सारे !

श्री कृष्ण गोविन्द हरे मुरारे,

अच्युत अनंता भगत-पियारे,

हरहु नाथ मम अवगुन सारे !

मेरे घर भी आते राम !

मेरे घर भी आते राम !

मैं भी कोई शिला बन जाता,

या शबरी के बेर खिलाता,

या केवट सी नाव बंधाता,

और पर्ण कुटी सजवाता ।

मेरी राह गुज़रते राम !

मेरे घर भी आते राम !

मेरी पूजा में असुर विघ्न हैं,

फेक रहे आहुतियों में भ्रष्ण हैं ,

माना विश्वामित्र नहीं हूँ मैं,

ना ही कोई ज्ञानी हूँ मैं ,

मेरी रक्षा को भी आते राम

मेरे घर भी आते राम !

सो लेते लक्ष्मण जी भी,

जाग जाग मैं पहरा देता,

तुम तीनों सोते मैं पंखा झलता,

काँटों से राह रहित कर देता,

इक अवसर तो देते राम !

मेरे घर भी आते राम !

खर-दूषण में द्वन्द लगाता,

उनको आपस में लड़वाता,

स्वर्ण हिरन को मैं ले आता,

तब क्या रावण भी आ पाता ?

मझको कुछ करने देते राम !

मेरे घर भी आते राम !

रक्षा भक्तों की करने वाले,

असुर शक्तियां हरने वाले,

जन मानस में बसने वाले,

पुरुषोत्तम कहलाने वाले,

मेरी भी पूजा में फलते राम !

मेरे घर भी आते राम !

गीत

अगर मैं अर्जुन नहीं हो सका,

तो क्या योगेश्वर ! साथ न दोगे ?

माना रिश्ता नहीं है तुमसे, पर बंधन तो हैं सांस सांस के,

रग रग में तुम बसे हुए हो, इस शरीर में हाड़ माँस के ,

मुझको चक्रव्यूह का तोड़ ने दोगे?

क्या योगेश्वर ! साथ न दोगे ?

रण में मैं भी खड़ा हुआ हूँ, नातों के संग भिड़ा हुआ हूँ,

युद्ध करूँ इनसे या छोड़ूं, इस दुविधा में पड़ा हुआ हूँ,

मुझ दुर्बल मन को ज्ञान न दोगे?

क्या योगेश्वर ! साथ न दोगे ?

कटा अंगूठा नहीं किसी का, मेरे कारण कहीं किसी का,

हर एक लक्ष्य हर एक निशाना, चूका जाने क्यों मुझ ही का,

हार चुके भक्तों का साथ न दोगे ?

क्या योगेश्वर ! साथ न दोगे ?

कोई द्रौपदी नहीं वरण की, बृहन्नला बन नहीं शरण ली,

जग ने मेरी पहचान नहीं की, और न पाई मैं ने कीर्ति क्षण की,

मुझ गिरे हुए को हाथ न दोगे?

क्या योगेश्वर ! साथ न दोगे ?

<u>हे कष्टहरण ,,,,</u>

जय हनुमान ज्ञान गुणसागर, हे पवनपुत्र,हे करुणाकर,

अष्ट सिद्धि नव निधि के दाता, जग के ताप हरो फिर आ कर !

जिस धरती पर राम चले थे,उस पर असुर डोलते हैं अब,

स्वर्ण हिरन का भेस किये,मारीच बहुत घूमते हैं अब,

फिर सुग्रीव भूल गया है,लंका का ही पता लगाना ,

गली गली में बैठा है, अब रावण किये ठिकाना,

उतरो किष्किंधा से महाकाय,भक्तन की सुन लो आ कर !

जग के ताप हरो फिर आ कर !

कलियुग ने सब बदल दिया है,मन पर- मति पर ग्रहण लगा है,

राम राम भजने पर अब,दुनिया का क़ानून कड़ा है,

वंश विभीषण का भी तो, हमसे बैर किये रहता है,

भक्त राम का हर प्रकार से, यों त्रस्त रहा करता है,

ध्वस्त करो दुष्टों की लंका,पुनः पुच्छ में आग लगा कर !

जग के ताप हरो फिर आ कर !

ये सुरसा मुंह फाड़ रही है,धरती सागर से पाट रही है,

औषधियों से हरिक वैद्य की,अमृत अमृत चाट रही है,

रण में मूर्छित हुए पड़े हैं, कितने ही लक्ष्मण भी,

सब जीव जंतु अकुलाहट में,समझ नहीं पाते हैं कुछ भी,

सर्व-रोगहरा ! हे वज्रदेह ! संजीवन दे दो लाकर !

जग के ताप हरो फिर आ कर !

हम मूरख, खल,कामी,तुम शुद्ध भक्त सन्यासी,

हम क्षण भंगुर प्राणी,तुम देह अति अविनासी ,

संकट मोचन, तुम राघव के भरतहि सम भाई ,

सारे काज तुम ही से कह कर सिद्ध करें रघुराई,

हे अञ्जनेय अब ऐसा हो के,रहें सुरक्षित सब जन-नागर !

जग के ताप हरो फिर आ कर !

जय हनुमान ज्ञान गुणसागर, हे पवनपुत्र,हे करुणाकर,

अष्ट सिद्धि नव निधि के दाता, जग के ताप हरो फिर आ कर !

गीत

जब मन से बोझ उतर जायेगा,

तब मन कितना थक जायेगा !

जिन अतीत की यादें ढोते, अपनी ही करनी को रोते,

स्वयं कलेजे चीर दिए हैं, जिनजिन ने अपने ही हो के,

घाव पुरे भी उनका तो क्या वो बिन दाग़ दिए जायेगा ?

तब मन कितना थक जायेगा !

रिश्ते नाते बहुत निभाये,ऐसे जो आँचल न समाये ,

कितनों ने हम पर तो कितने ही एहसान चढ़ाये,

धन्यवाद कह देने भर से क्या उनका ऋण चुक जायेगा?

तब मन कितना थक जायेगा !

हँसते हँसते रो जाता हूँ,व्यथा समझ नहीं पाता हूँ,

अंतर को क्या काट रहा है, सोच सोच कर थक जाता हूँ,

अगर समझ में आ जाये तो क्या उदास मन खिल जायेगा?

तब मन कितना थक जायेगा !

रुष्ट रहा करता है मुझसे, दिल बात नहीं करता है मुझसे,

भावहीन हो कर के जीना, कठिन हुआ जाता है मुझसे,

आँचल कोई मिले तो शायद भखुरा मित्र बहल जायेगा !

तब मन कितना थक जायेगा !

"एक नई आरती"....

तुम तोड़ते जाओ-

जगन्नाथ जी के मठ,

बाबा विश्वनाथ के "परिवार" गण !

किये जाओ

केदारनाथ/बद्रीनाथ धामों को अपने अर्दलियों के हवाले,

बनाते जाओ टूरिस्ट स्पॉट्स !

हम कुछ नहीं बोलेंगे !

क्योंकि हम तुम्हें भगवान बना चुके हैं!

तुम जो चाहो कर सकते हो -

मंदिरों के साथ

परमात्मा के साथ,

हमारे साथ,

पूजा घरों के पंडितों को जेल भेजने से ले कर

गर्भ ग्रहों में आराम देह टॉयलेट्स बनवाने तक।

और मुंह चिढ़ाते हुए

इन जगहों के 'बोतलों' के पानी,

'प्रसाद' और एंट्री से कमाई करते

ख़रीद सको ख़ुद को पूजने वाले 'लोग'

जो तुम्हारी ख़ुशी के लिए

अपने ही लोगों से वैसा बर्ताव कर सकें

जैसा कुछ ने जनरल डायर के आर्डर देने पर किया था ।

उन स्थानों में जहाँ

प्रार्थना के लिए जाता था

वहां मै शायद अब जाना अफ़्फोर्ड न कर सकूं।

लेकिन तुम वहां प्रतिष्ठित होना।

तुम्हें हमने चुना है

भगवान के रूप में !

<u>सब बेकार हो गया,,,,!</u>

जो जो तुमने सिखलाया था,

वो वो सब बेकार हो गया,

जाने क्या संसार हो गया !

प्रेम प्यार से जीना बेटा,सबसे मिल कर रहना बेटा,

गली मोहल्ले सब लोगों के,कामों में आते रहना बेटा !

बेटा सुन कर निहाल हो गया !

मानव का उद्धार इसी में,खुशियों का संसार इसी में ,

राम कृष्ण से सीखो बेटा, एक प्राण हर एक किसी में !

एक आत्म विस्तार हो गया !

मात्र रूप का वंदन करना ,भ्रात्र रूप से मिल कर रहना,

मित्र रूप से हिलमिल कर के ,सबके सदा हितैषी रहना !

तब समझो कल्याण हो गया !

छल बल से व्यवहार न करना,सच कहने से कभी न डरना,

कितनी भी भीषण आँधी हो,अपनी धरती सुदृढ़ रहना !

समझो तो उद्धार हो गया !

तुम समझे थे सब सच्चे हैं,मानव प्रभु के ही बच्चे हैं,
राम राज हर समय चलेगा,लोग बाग सब ही अच्छे हैं !
वो समय तुम्हारा पार हो गया !

कितना पाठ पढ़ाया तुमने,क्या क्या तो समझाया तुमने,
मगर समय इतना बदलेगा,कहाँ हमें बतलाया तुमने !
समय शकर से क्षार हो गया !

अब जग मुझे सिखाता है जो,नहीं मानते हरगिज़ तुम वो,
मगर विवश हूँ सीख रहा हूँ,जीना है इस जग में मुझको !
हाँ ! जी इससे क्षुब्ध हो गया !

बात बात में झूठ बोलना,संबंधों में स्वार्थ तौलना,
होठों पर मुस्कान चढ़ा कर,मित्रों की भी रीढ़ तोड़ना !
जैसे अब स्वभाव हो गया !

तुम होते तो कष्ट उठाते,मुझको सहन नहीं कर पाते,
क्रोधित हो कर के रह जाते,हम भी कहाँ सहज रह पाते !
कितना मेरा पतन हो गया !

जीवन इक व्यापार हो गया,समझौतों का सार हो गया,
जो जो कुछ सिखलाया तुमने, वो वो सब बेकार हो गया !
जाने क्या संसार हो गया !

जो जो तुमने सिखलाया था,

वो वो सब बेकार हो गया,

जाने क्या संसार हो गया !